IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन।

छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर

शोधार्थी

अनुवर्मा

शोध निर्देशिका

डॉक्टर सीता त्रिपाठी

असिस्टेंट प्रोफेसर शिक्षक प्रशिक्षण विभाग

अकबरपुर महाविद्यालय कानपुर

सारांश

शोध पत्रिका के माध्यम से विशेष विद्यालयों में अध्ययन दर्शन बाधित सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है जिसके अंतर्गत यह निष्कर्ष प्राप्त किया गया कि सरकारी व गैर सरकारी छात्र–छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर होता है। छात्राओं की अध्ययन आदतें अत्यधिक रूप से प्रभावित होती हैं।इस शोध पत्रिका के माध्यम से विशेष विद्यालयों में अध्यनरत सरकारी गैर सरकारी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है जिसके अंतर्गत छात्राओं के क्षेत्र के आधार पर अध्ययन किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है वह जनसंख्या के रूप में लखनऊ जनपद में स्थित विशेष विशेष विद्यालयों में अध्यनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों को लिया गया है जिसमें कुल 60 छात्राओं का चयन उद्देश्य पूर्ण विधि द्वारा किया गया है अध्ययन हेतु मानकीकृत अनुराधा शर्मा उपकरण का प्रयोग किया गया गया है। अध्ययन के आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए सांख्यिकी विधियो में मध्यमान मानक विचलन वटी टेस्ट आदि का प्रयोग किया गया है। विशेष विद्यालय में अध्यनरत सरकारी व गैर सरकारी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में कोई भी सार्थक अंतर नहीं पाया गया है परंतु लिंग के आधार पर इसमें अंतर देखा गया है।

मुख्य शब्द – सरकारी, गैर सरकारी श्रवण बाधित, अध्ययन आदत टी अनुपात आदि |

प्रस्तावना-

शिक्षा आज के समाज को एक नई दिशा प्रदान करती है शिक्षा के माध्यम से ही बच्चों में ज्ञान कौशल और चारित्रिक गुणों का विकास किया जाता है शिक्षा एक मौलिक अधिकार ही नहीं बल्कि एक मानव अधिकार भी है अनुच्छेद 21 । के अनुसार–प्रत्येक बच्चे को बुनियादी शिक्षा पाने का अधिकार है। परंतु प्राचीन काल से यह संभव नहीं था सभी बच्चों को समान रूप से नहीं देखा जाता था। प्रत्येक बच्चे को शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक व सामाजिक स्तर पर बाधाओ की एक विस्तृत श्रृंखला का सामना करना पड़ता था। जो भी बच्चा शारीरिक व मानसिक संवेगात्मक रूप से अन्य से भिन्न होता था उन्हें हम दिव्यांग की श्रेणी अर्थात विकलांगजनों की श्रेणी में रखते थे। दिव्यांग से तात्पर्य कोई भी ऐसा बच्चा जो सभी सामान बच्चों से भिन्न हो अर्थात उनके किसी भी अंग या उनके मस्तिष्क में दोष का होना ऐसे बच्चे विशिष्ट बच्चों की श्रेणी में आते हैंप इनमें हम उन बच्चों को भी रखते हैंप जो बच्चे या तो बहुत ही बुद्धिमान या मंदबुद्धि होते हैं। ऐसे बच्चों के लिए अलग से विद्यालय बनाए गए हैं व अलग से उनकी कक्षाएं चलाई जाती हैं।

कोठारी कमीशन 1964–66 के अनुसार– विशिष्ट समूह के बालकों के लिए उपयुक्त शिक्षा सेवाएं उपलब्ध कराई गए हैंप भारत में विशिष्ट बालकों को अलग रूप में ना देखा जाए इसके लिए समावेशी शिक्षा की शुरुआत यूरोप में इटार्ट के द्वारा सर्वप्रथम की गई थी यह फ्रांस के प्रसिद्ध चिकित्सक थे। इटार्ट ने ही सर्वप्रथम अपंग बालकों को शिक्षा प्रदान की थी। परंतु विशिष्ट बालकों को सामान्य बालकों के साथ पढ़ना आसान नहीं था इस तरह की शिक्षा प्रणाली का चयन कर पाना अत्यंत कठिन था। इसलिए जो छात्र निम्न स्तर की गति से अधिगम करते हैं उन छात्रों के लिए विशिष्ट विद्यालय ही बनाए गए हैं। शिक्षा के माध्यम से हम किसी भी मनुष्य का सर्वांगीण विकास कर सकते हैं मनुष्य का शरीर विभिन्न आंतरिक व बाहरी अंगों से मिलकर बना है। जिसके अपने–अपने कुछ आवश्यक कार्य होते हैं ।वह इनमें से किसी में भी चाहे वह आंतरिक हो या बाहरी अंगों किसी में भी क्षति आ जाने से वह अपने व्यक्तिगत किसी भी कार्य को कर पाने में असमर्थ हो जाते हैं वह इसकी वजह से वह शिक्षा को प्राप्त कर पाने में सक्षम नहीं हो पाते हमारे समाज की यह पुरातन काल से यही मान्यता रही है कि जो व्यक्ति निशक्त होते हैं। वह उत्पादन कार्य करने में सहयोग नहीं कर पाते हैं समाज की भ्रांति को केवल शिक्षा से समाप्त किया जा सकता है विशेष विद्यालयों में अध्यनरत छात्र आज अधिक से अधिक शिक्षा ग्रहण करने में सक्षम है वह किसी भी प्रकार की दिव्यंका से ग्रसित होकर भी अपने दैनिक कार्यों को ही नहीं करने में सक्षम है बल्कि एक अच्छे अच्छे पद पर भीदेखे जाने के बजे एक स्वतंत्र अधिगमकर्ता के रूप में देखे जाने की आवश्यकता है जिससे एक लोकतांत्रिक समाज में बच्चों के समुचित वातावरण में अधिगम का सृजन किया जा सके पीडी एक्ट 1995 विकलांग व्यक्ति अधिनियम ने विकलांगता को परिभाषित किया है अधिनियम विकलांगता को ऐसे किसी भी स्थिति के रूप में परिभाषित करता है। जो व्यक्ति की एक या अधिक प्रमुख जीवन गतिविधियों को काफी हद तक सीमित कर देती है इसके अंतर्गत शारीरिक मानसिक संवेगिक व अन्य विकलांगता शामिल है सरकार के द्वारा सभी प्रकार की विकलांगताओं के लिए विशेष विद्यालयों की स्थापना की गई है जिनमें वह छात्र शिक्षा ग्रहण करते हैं ।जो सामान्य छात्रों के साथ शिक्षा ग्रहण करने में सक्षम नहीं है विशेष विद्यालय अपने में विशेष है इसके अंतर्गत उन सभी छात्रों के लिए शिक्षा से संबंधित सुविधाएं उपलब्ध है जिसके माध्यम से वह शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। परंतु क्या इन सभी सुविधाओं के माध्यम से सभी छात्राएं समान रूप से अधिगम प्रक्रिया को कर पाते हैं ।आदतें बच्चों की प्रारंभिक अवस्था है यह शिशु अवस्था से बच्चों में पाई जाती है बच्चों में किसी भी तरह की आदतें चाहे वह बोलते वह व्यवहार कैसा करना है यह शिशु उम्र में ही डाली जाती है वह तभी प्रत्यक्ष रूप से दिखने भी लगती है पहले बच्चे अनुकरण करके सीखते हैं अर्थात

जो देखते हैं। वही सीखते हैं जैसे–जैसे बच्चे बड़े होते हैं । वैसे–वैसे सीखने की आदतों को विकसित कर लेते हैं देखा जाता है सभी बच्चों की सीखने की आदतें भिन्न भिन्न होती हैं। जैसे कोई बच्चा पढ़ कर तो कोई लिख कर सकता है कोई धीरे–धीरे सीखना है तो कोई तेज गति से कोई नोटिस तैयार करके सीखना है तो कोई निरंतर बैठकर पढ़कर सीखना है यह सभी सीखने की आदतें कहलाती हैं।अर्थात अध्ययन आदतें विशेष विद्यालयों में छात्र–छात्राओं की पढ़ने की आदतों को ही शोध कार्य में जानने का प्रयास किया गया है अध्ययन आदतें किस तरह छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सहायक है व क्या सरकारी व गैर सरकारी या लिंग के आधार पर छात्राओं में कुछ भिन्नताएं देखी जा सकती हैं यही शोध पत्रिका के माध्यम से देखा गया है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

शिक्षा एक ऐसा माध्यम है, जिसक` द्वारा व्यक्तियों का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है। शिक्षा समानता और सशक्तिकरण का एक मार्ग प्रशस्त करती है, विशेष जरूरत वाले कई बच्चे एक शैक्षिक प्रणाली के शिकार हो गए हैं। वह अपनी व्यक्तिगत जरूरत को पूरा करने में सक्षम नहीं है, जब बच्चा पैदा होता है, तो वह कई क्षमताओं के साथ पैदा होता है कुछ बच्चों मे ं योग्यता ज्यादा होती है तो किसी में सामान्य व किसी में सामान्य से कम पाई जाती है परंतु इन भिन्नताओं क` बावजूद सभी विद्यार्थियों को शिक्षा समान रूप से प्रदान की जानी चाहिए।

UNESCO SALAMACA (1994) के अन ुसार सभी बच्चों को शिक्षा पाने का समान अधिकार है, हर बच्चा अपने में भिन्न है, क ुछ रुचियां के अन ुसार कुछ योग्यता के अन ुसार कुछ अधिगम आवश्यकताओं के अन ुसार व इसी के आधार पर उनक` विद्यालयों को विभाजित किया गया है PWD ACT 1995– मैं मूक-बधिर विद्यार्थियों को विशिष्ट समूह में सम्मिलित किया गया है क्यो ंकि यह छात्र सुनने व बा`लन` मे ं सक्षम नहीं होते हैं। और यह मानव जीवन की सबसे बड़ी कमी है,ऐसे विद्यार्थियों का जीवन कठिन होता है उनको शिक्षा ग्रहण करने में कई समस्याएं आती हैं। जन्मजात श्रवण बाधित छात्रों को (DUMB) समझा जाता है ज्यादातर जो छात्र सुन नहीं पाते वह बोलन` में भी सक्षम नहीं होते हैं। ऐसे विद्यार्थियों को शिक्षा देना शिक्षक क` लिए एक चुनौती पूर्ण कार्य होता है ऐसी विद्यार्थियों की अध्ययन प्रक्रिया को समझना आवश्यक है क्योंकि जब वह किसी भी ध्वनि को सुन नहीं पा रहे हैं तो वह किस प्रकार से से वह अपनी अध्ययन प्रक्रिया को कर पाते होंगे।

संबंधित शोध की समीक्षा-

तुष जोसिला रियो फ्रांसीसी न्यू बो रिमार्क (2020)-" शिक्षार्थियों की अध्ययन आदतें और उनके शैक्षिक प्रदर्शन पर प्रभाव" शोधार्थी के अनुसार अध्ययन आदतें किसी भी अकादमिक सफलता के केंद्र में होती हैं अध्ययन आदतें क्रियो को बताती हैं जैसे पढ़ना लिखना आदि परंतु अपने अध्ययन के द्वारा जो परिणाम प्राप्त हुए उसके अनुसार अध्ययन की आदतों और शैक्षिक प्रदर्शन के बीच कोई सार्थक संबंध नहीं है अध्ययन की आदतें औसत स्तर पर है इसके अतिरिक्त छात्रों के अध्ययन की आदतों को बढ़ाने के लिए विशेष रूप से पढ़ने की क्षमता स्वास्थ्य में वह नोट्स के द्वारा पढ़ने से जिससे उनके शैक्षिक प्रदर्शन में सुधार होता है उसे है।

लोनी अहमद रफीक (2021)- छात्रों के बीच अध्ययन की आदतों और शैक्षिक प्रदर्शन एक प्रणाली वृद्धि समीक्षा- इस पत्रिका में यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि शैक्षिक उपलब्धि विभिन्न पहलुओं पर निर्भर करती है जैसे बुद्धिमत्ता आत्म प्रभावशीलता आत्मसम्मान आत्मविश्वास अध्ययन रणनीति वंशानुगत पर्यावरण माता पिता की आरती की स्थिति माता-पिता की अच्छी स्थिति स्कूल वातावरण शिक्षण विधियां इसके साथ ही अध्ययन की आदते अच्छी अध्ययन की आदतें सामान बुद्धिमत्ता स्टार वाले अन्य छात्रों की तुलना में शैक्षिक प्रदर्शन को तेज करती है अध्ययन की आदतें छात्र के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है छात्र की सफलता सफलता उसकी अध्ययन की आदतों पर निर्भर करती है शिक्षकों को छात्रों में अच्छी अध्ययन की आदतों को विकसित करने में मार्गदर्शन करना चाहिए।

महेंद्र प्रभु एंटोनी सोनिया सुभाषिनी (2022) उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में अध्ययन की आदतें और इसके शैक्षिक प्रदर्शन पर प्रभाव- निष्कर्ष के अनुसार अध्ययन की आदतें अधिकतम श्रेणी में है वह उनकी

अंग्रेजी सीखने की उपलब्धि में उच्च स्तर पर है इसमें यह ज्ञात हुआ है कि अध्ययन की आदतें वह सीखने की उपलब्धि में महत्वपूर्ण व सीधा संबंध देखा जा सकता है।

सीमा चौहान (2002) अध्ययन की आदतों और शैक्षिक उपलब्धियां के संबंध में पारिवारिक संबंधों का अध्ययन- शोध के इस अध्ययन के परिणामों की व्याख्या से निष्कर्ष प्राप्त हुए की पारिवारिक व्यवहार अध्ययन आदतों को प्रभावित नहीं करता है मां द्वारा बच्चों की स्वीकृति व अस्वीकृति बच्चों की अध्ययन आदतों में महत्वपूर्ण अंतर डालती है।

अध्ययन का शीर्षक

विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध के उद्देश्य

- विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन।
- विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित सरकारी एवं गैर सरकारी छात्रों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन।
- विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित सरकारी एवं गैर सरकारी छात्राओं की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पनाएं

- विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
- विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित सरकारी एवं गैर सरकारी छात्रों की अध्ययन आदत में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
- विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित सरकारी एवं गैर सरकारी छात्राओं की अध्ययन आदतमें कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

प्रयुक्त शब्दों का पारिभाषिक कारण

विशेष विद्यालय

विशेष विद्यालय एक ऐसा विद्यालय है जो विशेष रूप से उन बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करता है जिनकी जरूरतें मुख्य धारा के विद्यालय द्वारा प्रदान किए गए प्रावधान और समर्थन से पूरी नहीं की जा सकतीहै।

अध्ययन आदतें

अध्ययन आदतों से तात्पर्य विद्यार्थियों द्वारा अध्ययन हेतु की जाने वाली विभिन्न प्रक्रियाओं में प्रयुक्त व्यवहार से है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध पत्रिका के विषय या स्वरूप को देखते हुए प्रस्तुत शोध पत्रिका में वर्णनात्मक विधि के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गयाहै।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में श्रवण बाधित विद्यार्थियों की जनसंख्या को सम्मिलित किया गयाहै।

प्रतिदर्श

प्रस्तुतशोध पत्रिका में 60 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

प्रतिदर्श चयन विधि

प्रस्तुत शोध पत्रिका में उद्देश्य पूर्ण प्रतिदर्श विधि को चयनित किया गया है।

सांख्यिकी विधियां

अध्ययन में आंकड़ों का विश्लेषण हेतु प्रतिशत विश्लेषण एवं t – मान सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी संख्या 1

1 विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के मध्यमान, मानक विचलन,मानक त्रुटि एवं क्रांतिक अनुपात

sr.no.	Area	N	M	SD	M1-M2	σD	T VALUE	Level of significance
1	स्करारी	30	64.433	6.90	0.33	1.9	0.8599	0.5
	गैर सरकारी	30	64.766	7.64				

व्याख्या –

सारणी1 प्रस्तुत सारणी में प्रदर्शित तथ्यों से यह ज्ञात होता है कि में विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के मध्यमान के बीच 0.33 अंतर है प्रदत्तों के आधार पर मध्यमानों के बीच क्रांतिक अनुपात का परिगणित मान 0.8599 है जो की t सारणी में मुक्तांश (df) 58 पर देखने पर t का मान 0.5 सार्थकता स्तर पर 2.0 से कम है जो की सार्थक नहीं है अतः विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यार्थियों की अध्ययन आदता में सार्थक अंतर नहीं है अतः पूर्व प्रकल्पित सून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है अतः दोनों क्षेत्रों के श्रवण बाधित विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर देखने को नहीं मिलता है।

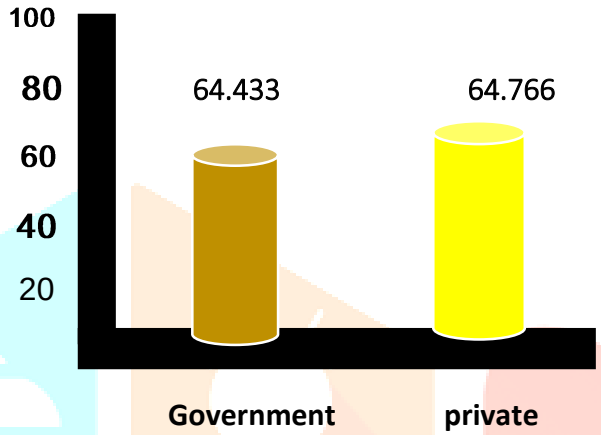

विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के मध्य मध्यमानों के अंतर का आरेख चित्र

सारणी संख्या 2

विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित सरकारी एवं गैर सरकारी छात्रों की अध्ययन आदतों के मध्यमान, मानक विचलन,मानक त्रुटि एवं क्रांतिक अनुपात

sr.no.	Area	N	M	SD	M1-M2	σD	T VALUE	Level of significance
1	Govt.school	15	67.93	7.14	7	2.27	2.5	0.5
	Private school	15	60.93	4.63				

सारणी 2 प्रस्तुत सारणी में प्रदर्शित तथ्यों से यह ज्ञात होता है कि में विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित सरकारी एवं गैर सरकारी छात्रों की अध्ययन आदतों के मध्यमान के बीच अंतर 7 है प्रदत्तों के आधार पर मध्यमानों के बीच क्रांतिक अनुपात का परिगणित मान 2.5 है जो की t सारणी में मुक्तांश (df) 28 पर देखने पर t का मान 0.5 सार्थकता स्तर पर 2.05 से अधिक है जो की सार्थक है अतः विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित सरकारी एवं

गैर सरकारी छात्रों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर है अतः पूर्व प्रकल्पित सून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है अतः दोनों क्षेत्रों के श्रवण बाधित **छात्रों** की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर देखने को मिलता है।

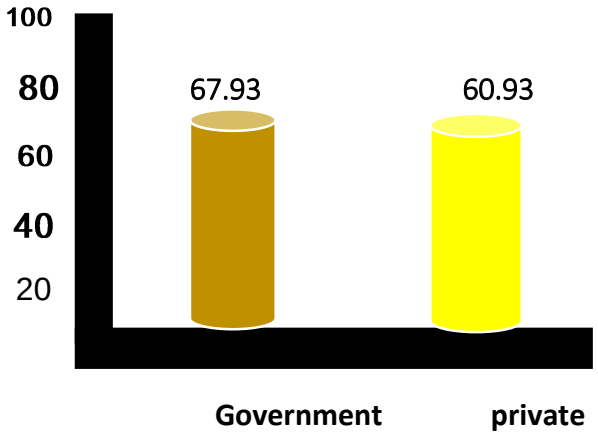

विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित सरकारी एवं गैर सरकारी छात्रों की अध्ययन आदतों के मध्य मध्यमानों के अंतर का आरेख चित्र

सारणी संख्या 3

विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित सरकारी एवं गैर सरकारी छात्राओं की अध्ययन आदतों के मध्यमान, मानक विचलन,मानक त्रुटि एवं क्रांतिक अनुपात

Sr.no.	Area	N	M	SD	M1-M2	σD	T VALUE	Level of significance
1	Govt.school	15	70.13	5.083	10.73	2.05	5.23	0.5
	Private school	15	59.4	5.79				

सारणी 3 प्रस्तुत सारणी में प्रदर्शित तथ्यों से यह ज्ञात होता है कि में विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित सरकारी एवं गैर सरकारी **छात्राओं** की अध्ययन आदतों के मध्यमान के बीच अंतर 10.73 है प्रदत्तों के आधार पर मध्यमानों के बीच क्रांतिक अनुपात का परिगणित मान 5.23 है जो की t सारणी में मुक्तांश (df) 28 पर देखने पर t का मान 0.5 सार्थकता स्तर पर 2.05 से अधिक है जो की सार्थक है अतः विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित सरकारी एवं गैर सरकारी छात्रों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर है अतः पूर्व प्रकल्पित सून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है अतः दोनों क्षेत्रों के श्रवण बाधित **छात्राओं** की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर देखने को मिलता है।

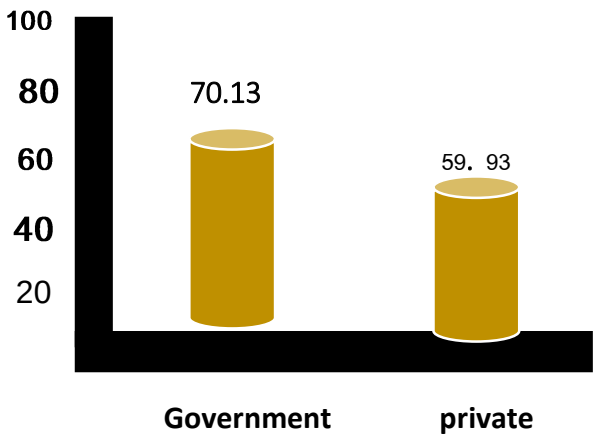

निष्कर्ष – शोध के माध्यम से प्रस्तुत सारणीयों में प्रदर्शित तथ्यों से यह ज्ञात होता है की सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्यनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। परंतु लिंग के आधार पर अध्ययन किया गया तो निष्कर्ष में प्राप्त हुआ कि सरकारी व गैर सरकारी छात्रों व छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर होता है।

REFERENCE

- ,Seema chauhan.(2002)अध्ययन की आदतों और शैक्षिक उपलब्धियां के संबंध में पारिवारिक संबंधों का अध्ययन- http://hdl.handle.net/10603/10987 Shodhganga
- Dr.Kumar,R(2023). Samaveshi shiksha ka srajan.Delhi: JTS Publications.
- Dr.Mehta,S.S. (2023).Samaveshi shiksha(1ed,vol.1). Mharashtra: Rudra Publications.
- Dr.Singh,R.R.(2021).Samaveshi Shiksha dasha evam disha (1ed,vol.1) New Delhi:Kanishk Publishers
- Lone Ahmad Rafiq.(2021)छात्रों के बीच अध्ययन की आदतों और शैक्षिक प्रदर्शन एक प्रणाली वृद्धि समीक्षा

http://doi.org/10.305/rrijm.2021.v06.i05.019

- Kothari,C.(2020). Research Methodology(2022ed.).New Delhi: New Age International

Publishers.

- **Tus Jhoselle, Rayo Francis, lubo Reymark , Cruz Anthony Mark**.(2020) शिक्षार्थियों की अध्ययन आदतेंऔरउनकेशैक्षिक प्रदर्शन पर प्रभाव"

http://doi: 10.6084/mg.figshar.13325177.v1Issue.6 www.ijarw.com